रबड़ का
जूता

वाणी प्रकाशन

वाणी प्रकाशन, 4695, 21-ए, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
: अशोक राजपथ, पटना, (बिहार)

मूल्य : ₹ 50

संस्करण : 2011

लेखक : मिख़ाईल प्ल्यात्स्कोवस्की

अनुवादक : मदनलाल 'मधु'

ISBN : 978-93-5000-555-2

Rabar Ka Joota
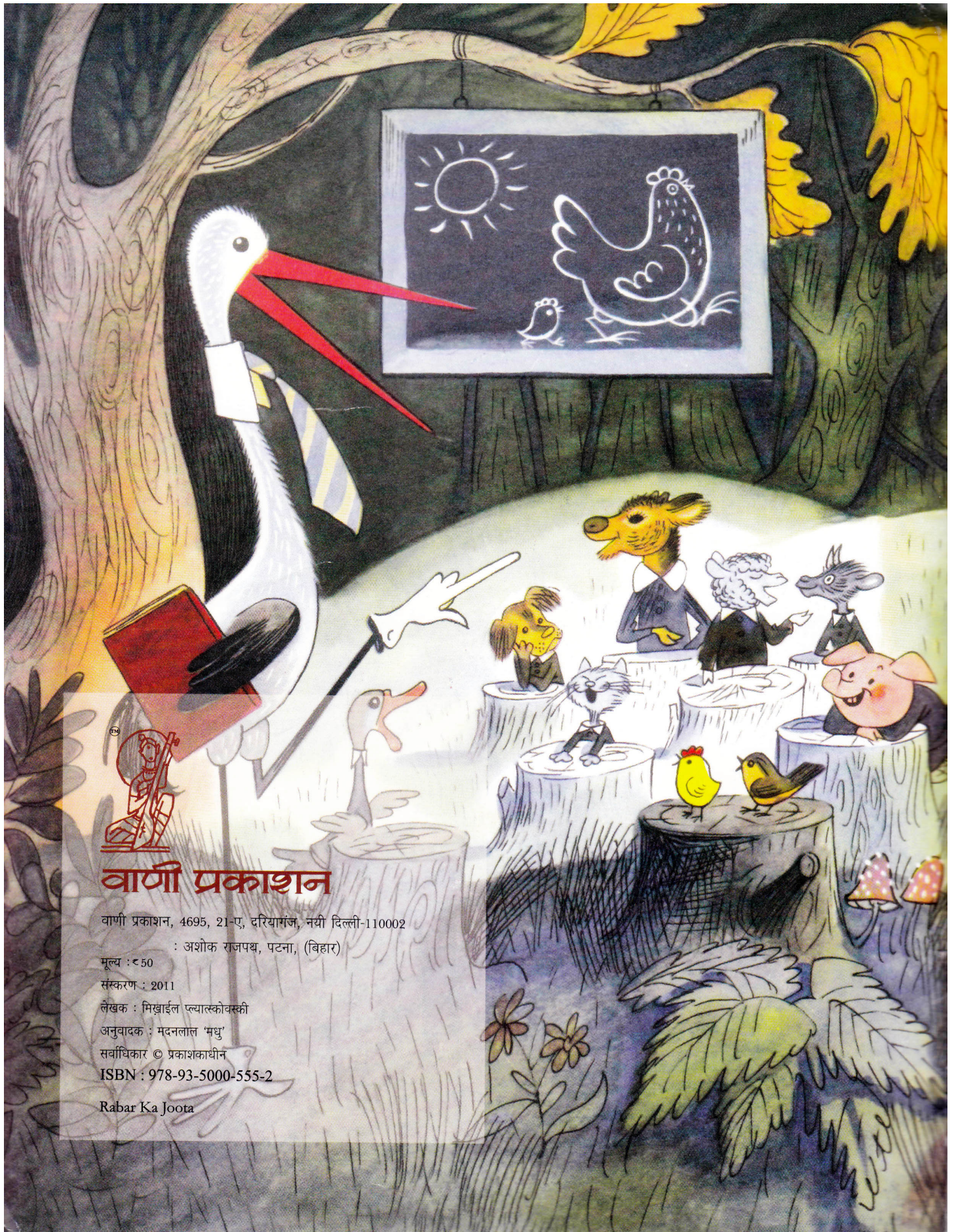
सारस और उसके चेले

विद्वान सारस ने जंगल में स्कूल खोलने की सोची। बस, सोचा और कर डाला। उसने सभी जानवरों के बच्चों को पहले पाठ के लिए इकट्ठा किया। वे सभी डेस्कों पर बैठकर गम्भीर गुरु को ध्यान से देखने लगे। सारस ने खड़िया से ब्लैकबोर्ड पर एक शब्द लिखा।

"अब इस छोटे-से शब्द को हम वर्ण जोड़-जोड़कर पढ़ेंगे। सभी मेरे पीछे-पीछे दोहराओ-मा-मा..."

सभी बच्चे ऐसे चुप रहे मानो उनके मुँह में पानी भरा हुआ हो।

सारस मेमने के पास गया-

"तुम कहो तो..."

मेमने ने चाहे कितनी ही कोशिश की, वह "मे-मे" ही कह पाया। तब सारस बकरी के भूरे बच्चे के नजदीक गया। वह तो केवल "बे-बे" ही कह पाया।

सारस से खीझते हुए चोंच पर अपना चश्मा ठीक किया और डरे हुए पिल्ले से कहा-

"अब तुम दोहराओ तो!"

पिल्ला "भौं-भौं" कह उठा।

गुरु ने माथे पर बल डालकर कहा-

"अरे, तुम तो न 'बे' और न 'मे'-कुछ भी नहीं कह सकते!"

चूजे की बारी आई। उसने "चूँ-चूँ" की।

गौरैया का बच्चा "चीं-चीं" कर उठा।

बछड़े ने "मू-मू" कहा।

हंस का बच्चा "गा-गा-गा" बोला।

बिल्ली के बच्चे ने "म्याऊं" की।

सूअर के बच्चे ने "खुर-खुर" की रट लगाई।

विद्वान सारस ने अपनी गद्दी खुजलाई, कुछ देर सोचता रहा और फिर सभी जानवरों के बच्चों को शानदार अंक दे दिये, क्योंकि उन सभी ने "मामा" शब्द सही कहा था, पर केवल अपनी-अपनी भाषा में।

छुआछुई का खेल और उसका नतीजा

जानवरों ने एक बार यह जानना चाहा कि उनमें से कौन सबसे ज्भयादा तेजभ दौड़ता है?

चीता बोला–

"इस मामले में तो सोचने का सवाल ही नहीं पैदा होता! सबसे तेजभ तो मैं ही दौड़ता हूँ!"

"ऐसा कहने की जल्दी न करो," जिराफ़ ने उसका जोश ठंडा करते हुए कहा। "यह तो अभी साबित करना होगा!"

"बिल्कुल ठीक!" गभुस्सैल जैगुआर ने उसकी बात का समर्थन किया। "यह तो अभी हम देखेंगे कि कि कौन सबसे ज्भयादा तेजभ दौड़ता है!"

इसी वक्भत हिरण ने बातचीत में हिस्सा लेते हुए कहा–

"आओ, ऐसा करें कि चीता जैगुआर को पकड़ने की कोशिश करे और जिराफ़ अगर ऐसा कर सकता है, तो मुझसे आगे निकल भागे। बाद में हम इसी खेल को उल्टे दोहरायेंगे।"

"बहुत बढ़िया ख़्याल है!" चीता चिल्लाया। "मगर मुझे यह कैसे पता चलेगा कि जैगुआर मेरे बराबर आ पहुँचा है?"

"तुम्हारी पीठ पर वह धीरे से अपना पंजा लगा देगा," हिरण ने फशैरन जवाब दिया।

"बस, तय हो गया!" लम्बे जिराफ़ ने चिल्लाकर कहा। "आइये, शुरू करें!"

जब यह दौड़ शुरू हुई, तो बारिश हो रही थी। ज़मीन जल्दी से गीली हो गयी। मगर होड़ करनेवालों ने कीचड़ और डबरों की ज़रा परवाह नहीं की। वे यह जानने को बहुत उत्सुक थे कि आख़िर कौन सबसे ज़्यादा तेज़ दौड़ता है?

पूरे तीन दिनों तक वे काली मिट्टी, लाल मिट्टी और बालू में भागते रहे और इतनी बार उन्होंने एक दूसरे की पीठ पर कीचड़ सने पंजे मारे कि उनकी खालों पर ढेरों धब्बे लग गये। किसी की खाल पर काले और किसी की खाल पर लाल धब्बे लगे...

बारिश बन्द हो गयी। पत्तों पर पानी की बूँदें सूख गयीं। मगर जंगली जानवरों की पीठों पर धब्बे तो जैसे के तैसे बने रह गये।

हाँ, छुआछूई का खेल भी जैसे का तैसा रह गया।

यह क़िस्सा मैंने उनके लिए गढ़ा है, जिन्हें ख़ुशी भरा और हो-हल्लेवाला यह खेल पसन्द है।

कौन पहले

एक दिन बत्तख़ और मेढक के बच्चे में इस बात पर बाजभी लग गयी कि कौन पहले डबरे को पार कर सकता है।

बत्तख़ का बच्चा बोला–

"मैं!"

और मेढक के बच्चे ने कहा–

"मैं!"

एक बड़ा-सा डबरा ढूँढकर वे उसके सिरे पर खड़े हो गये।

"अब करो तीन तक गिनती!" बत्तख़ का बच्चा बोला।

"मैं तैयार हूँ," मेढक के बच्चे ने कहा। "तीन तक मुझे गिनना आता है!"

वे दोनों मिलकर ऊँचे-ऊँचे गिनने लगे।

"टें-टें-टें!" बत्तख़ का बच्चा चिल्लाया।

"टर्र-टर्र-टर्र!" मेढक का बच्चा टरटराया।

दोनों ने टें-टें, टर्र-टर्र की और तैरने लगे।

बत्तख़ के बच्चे ने पूरा जोर लगाया, जल्दी-जल्दी पंजों को हिलाया-डुलाया। बस, थोड़ी ही दूर किनारा रह गया। बत्तख़ के बच्चे ने खुश होना चाहा मगर तभी क्या देखा कि मेढक का बच्चा तो दूसरे किनारे पर पहुँच भी चुका है और घास में आराम करता हुआ उसका इन्तजभार कर रहा है।

बत्तख़ का बच्चा डबरे से बाहर निकला और अपने तन से पानी झाड़ा। मेढक के बच्चे ने हँसकर उससे कहा–

"मेरे साथ बाज़ी लगाने से पहले कूदना तो सीख लिया होता! देखो तो, मैंने आधा डबरा छलाँग लगाकर और आधा तैरकर पार कर लिया। बेकार बाजभी मत लगाया करो, मेरे दोस्त!"

चालाकी भरा जवाब

हंस का बच्चा कन्सर्ट में गया और वहाँ उसने छोटे-से हरे टिड्डे को बहुत ही बढ़िया ढंग से अपनी वायलिन बजाते सुना। बाद में वह अपनी माँ से बोला-

"इसमें क्या ख़ास बात है... मैं भी ऐसे वायलिन बजा सकता हूँ!"

"तो फिर सोचने की कौन-सी बात है? करो आज़माइश!" हंसिनी ने उसे उकसाया।

"ओह, मगर मेरे तो सिर्फ़ दो पंजे हैं। अगर मैं एक में वायलिन और दूसरे में कमानी पकड़ूँगा, तो मंच पर खड़ा कैसे रहूँगा?"

रबड़ का जूता

किसी चुहिया को रबड़ का एक पुराना, बड़ा जूता कहीं पड़ा मिल गया। वह सोचने लगी–"क्या करूँगी मैं इसका?" वह वहाँ से जाने को हुई ही थी कि भचककर चलता हुआ छछून्दर आता दिखाई दिया।

"तुम्हारा जूता है, क्या?" धूप से अपनी आँखें सिकोड़ते हुए छछून्दर ने पूछा।

"मेरा है," चुहिया ने जवाब दिया।

"मुझे दे दो!"

"अगर मेरे लिए अधिक चौड़ा और अधिक बड़ा बिल बना दोगे, तो दे दूँगी," चालाक चुहिया राज़ी हो गयी।

छछून्दर काम में जुट गया। बलूत के नीचे उसने जल्दी-जल्दी बिल बना दिया और चुहिया से बोला–

"जाओ, मौज करो अपने नये घर में। जूता मैं ले लेता हूँ।"

चुहिया बहुत खुश हुई और अपना नया घर देखने भाग गयी। छछून्दर ने जूता लिया और आगे चल दिया। चलता जाता था और साथ ही साथ मन में सोचता जाता था–"क्या करूँगा मैं इसका?" वह उसे घास में फेंकना ही चाहता था कि साही रेंगती हुई आती दिखाई दी।

"तुम्हारा जूता है, क्या?" साही ने पूछा।

"हाँ, मेरा है," छछून्दर ने जवाब दिया।

"मुझे दे दो!" साही मिन्नत करने लगी।

"पिछली पतझर में जमा किये गये अपने सेबों में से अगर दस मुझे ला दो, तो दे दूँगा।"

साही दस सेब अपनी पीठ पर लाद लाई। छछून्दर ने झटपट सेब लिये और चलता बना।

साही ने जूते की ओर देखा और सोचने लगी–"क्या करूँगी मैं इसका?" सोचती रही, सोचती रही और कुछ भी न सोच पाई। गुस्से से वह जूते में सुइयाँ मार-मारकर उसे खराब करने की सोच ही रही थी कि सामने से शाखाओं पर कूदती-फाँदती गिलहरी आती दिखाई दी।

गिलहरी ने नीचे कूदकर पूछा–"तुम्हारा जूता है, क्या?"

"तो और किसका है?"

"अगर अफ़सोस न हो, तो मुझे दे दो!"

"चिलग़ोज़ों की सबसे बड़ी गाँठ तोड़ दो, तब दे दूँगी। ध्यान रहे कि उसमें एक भी चिलग़ोज़ा ख़ाली न हो!"

गिलहरी ने चिलग़ोज़ों की सबसे बड़ी गाँठ ढूँढ़ी और उसे पंजों में दबाकर साही के पास लाई। "शाबाश!" साही ने तारीफ़ की। "अब मुझे गिरियाँ निकाल दो और अपना जूता ले लो!"

गिलहरी ने उससे झगड़ा नहीं किया, झटपट गिरियाँ निकाल दीं। साही बहुत ख़ुश हुई। वह रेंगकर एक तरफ़ को चली गयी और झाड़ियों के नीचे से छिप-छिपकर यह देखने लगी कि गिलहरी जूते का क्या करती है?

लाल गिलहरी ने सबसे पहले तो बड़ी होशियारी से पत्ते चिपका-चिपकाकर जूते के छेद बन्द किये। फिर उसने पतला-सा डंडा लेकर उसकी बहंगी और बलूत के बीजों से बालटियाँ बनायीं और निकटवाली नदी की तरफ़ चल दी। फिर उसने जूते को सिरे तक पानी से भर लिया और अपने रोयोंवाले बच्चे को इस जूता-टब में नहलाने लगी। गिलहरी का बच्चा फूं-फूं करता था, उछलता-कूदता और हाथों से छूट-छूट जाता था। सभी ओर छींटे उड़ते और धूप में चमकते थे।

अब चुहिया भागी हुई आयी-"गिलहरी, जूता मुझे दे दो, मैं तुम्हें अपना बड़ा और खुला बिल दे दूँगी।"

चुंधा छछून्दर भटकता हुआ आया और मिन्नत करने लगा-"गिलहरी, जूता मुझे दे दो, मैं तुम्हें पिछले साल के दस सेब भेंट कर दूँगा।"

झाड़ियों में से साही निकलकर आई और लगभग रोते हुए बोली-

"गिलहरी, जूता मुझे दे दो, मैं तुम्हें चिलग़ोज़ों की ढेर सारी गिरियाँ दूँगी।"

गिलहरी ने इन सबकी बात सुन ली और बोली-"कुछ भी नहीं लूँगी मैं तुमसे। जूते के लिए मैं दिल छोटा नहीं करूँगी। अपने बच्चों को तुम सभी यहाँ ले आओ और मजे से नहलाओ!"

चुहिया, छछून्दर और साही को दयालु गिलहरी के सामने बड़ी शर्म आई। और अगर शर्म से उनके मुँह लाल हो सकते, तो जरूर ही हो जाते!

दयालु घोड़ा

“मैं सबसे अच्छी तरह कुकड़ईं-कूं की बांग दे सकता हूं!” मुर्ग़े ने डींग मारी।
“मैं छत पर उल्टी चल सकती हूँ,” मक्खी शान से भिनभिनाई।
“मैं हर आहट सुनती हूँ,” बिल्ली ने शेखी बघारी।
“मैं रात के वक़्त देख सकता हूँ,” उल्लू ने हू-हू की।
“मगर मैं... मैं... कुछ भी नहीं कर सकता,” चूज़ा ठिनकने लगा और आँसुओं की मोटी-मोटी बूँदें उसकी बादामी आँखों से नीचे गिरने लगीं। उसने ऐसे ज़ोर-ज़ोर से चीं-चीं की कि सभी इधर-उधर भाग गये।
सिर्फ़ छकड़े में जुतनेवाला एक बूढ़ा दयालु घोड़ा नीचे ही वहाँ रह गया।
“रोओ नहीं बच्चे,” उसने चूज़े से कहा। “तुम भी कुछ कर सकते हो... शेख़ीख़ोरों को भगा सकते हो!